परमात्मा से महापरिवर्तन का नया दौर

नये समाज के निर्माण की व्यथा किसी से छिपी हुई नहीं है। जब भी ऐसा कोई कार्य होता, उसमें बाधाएं भी आती हैं और हम हर समय एक नई चुनौती के लिए तैयार भी रहते। आपको हम बता दें कि हम यहाँ स्वर्णिम समाज की बात कर रहे हैं, जहाँ हमारी खुद की अपनी मंसा को साफ और हृदय को निर्मल बनाना होगा। यह एक ऐसा समाज है जिसमें व्यक्ति स्वयं ही स्वयं की बाधा है, उसकी प्रतिस्पर्धा भी स्वयं से ही। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसका कर्ता-धर्ता स्वयं परमात्मा है। और यदि परमात्मा ऐसा समाज बनायेगा तो कैसा होगा! ऐसा महापरिवर्तन जिसको पूरी दुनिया सोच भी नहीं सकती...!!!

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारत भूमि पर बड़े सहज व शांतिमय ढंग से महापरिवर्तन का नया दौर चल चुका है। और आपको आश्चर्यजनक लगेगा, परन्तु इसका बीड़ा स्वयं परमात्मा ने उठाया है। अरावली की श्रृंखला में बसा पवित्र स्थान माउण्ट आबू में परमात्मा शिव निराकार ज्योतिर्बिन्दू अपने साकार माध्यम, पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर यह कार्य करवा रहे हैं। इस महापरिवर्तन में वे लोग शामिल हैं जिन्होंने स्वेच्छा से पवित्रता को अपनाया है। जैसे गौतम बुद्ध जी ने कहा कि इच्छाएं ही मनुष्य के दु:ख का कारण हैं। तो बस हमें इच्छाएं कम करनी हैं। उसके लिए आत्मा की खुराक को समझना है। क्योंकि आत्मा सतोगुणी है, इसकी मानवीय इच्छाएं इन्द्रियों के असंयम के आधार से हैं। इसलिए हे आत्मायें! बस अपने को आत्मा समझकर चलना, कार्य करना है। शक्ति के लिए बार-बार हमसे जुड़ना है। यही परमात्मा हमसे कहते, और इसी के आधार से पूरे विश्व को एक नये दौर में ले जाते हैं। यह पूर्णत: स्वैच्छिक है, आप भी क्यों नहीं इस विधि को अपनाकर देखते हैं। यह कार्य चूंकि 80 वर्षों से अनवरत चल रहा है। महापरिवर्तन का यह दौर बस चंद दिनों का है। हम सभी के पिता शिव निराकार परमात्मा अपको भी यह मौका देना चाहते हैं कि आओ आपको भी ऐसी पावन दुनिया में ले चलूं जहाँ बिना मेहनत सब कुछ मिल जायेगा। कुछ नहीं करना है वहाँ, लेकिन उसके लिए यहाँ मेहनत करनी है।

कर्म की कहानी कही 'गीता' में शिव ने

'भगवान' अथवा 'परमात्मा' जो सारी सृष्टि का माता-पिता, अविनाशी शिक्षक तथा एकमात्र सद्गुरु अर्थात् सद्गति दाता है। नि-राकार शिव वास्तविक रूप में परमात्मा का नाम है। परमात्मा अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा जो ज्ञान देता है वो अति सहज है जिसे कोई भी अपना सकता है। गीता शब्द गीत से बना है, चूंकि गीत बहुत ही मधुर और मनमोहक होता है जिसे सभी लोग सुनते हैं और आनंद विभोर हो जाते हैं। वै-से ही यह ज्ञान भी एक गीत की तरह है जिसे बहुत ध्यान से सुनकर उस पर अमल कर उसका आनंद ले मन-मोहक 'कृष्ण' पैदा होता है। परमात्मा शिव सच्चा गीता ज्ञान दाता है, जिस गीता को सुनकर ही मनमोहन की तरह बना जा सकता है। श्रीमद्भगवद् गीता के लिए संसार में लोग कहते हैं कि इसे सुनकर मोक्ष व स्वर्ग की प्राप्ति होती है और जीवन के अंतिम क्षणों में गीता ज़रूर सुननी चाहिए, ये एक मान्यता है। ये विचारणीय है कि बहुतों ने इस जीवन के दौरान और अंतिम क्षणों में गीता सुनी व पढ़ी है लेकिन क्या उन्हें मोक्ष या स्वर्ग मिला होगा? आज उसी मोक्ष व स्वर्ग को दिलाने के लिए परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित हो सहज गीता ज्ञान से स्वर्णिम संसार लाने का अद्भुत कार्य कर रहे हैं। वैसे भी गीता में वर्णित है कि मुझ परमात्मा को समझने व जानने के लिए दिव्य चक्षु अर्थात् दिव्य ज्ञान चाहिए। उसके बिना मैं जाना नहीं जा सकता। भगवान शिव के इस ज्ञान को ही गीता कहा जाना चाहिए, ऐसा हमारा मानना है। जिसे सभी समझकर उस राह पर चल अपने जीवन में अपनाकर देवत्व ला सकते हैं। श्रीकृष्ण के भी परमपिता शिव हैं। श्रीकृष्ण ने तो उन परम सद्गुरु शिव से ही वह श्री नारायण पद प्राप्त किया था। इसा-लिए वृन्दावन में गोपेश्वर का मंदिर है जिसमें श्रीकृष्ण को शिव की पूजा करते हुए दिखाया गया है।

प्रेम ही जीवन का सत्य है

ई.आई. मालेकर, मानद सचिव,यहूदी धर्मसभा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें सभी के धर्मग्रन्थों का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी धर्मों की शिक्षाएं समान हैं, अगर अंतर है तो उनको सिर्फ जीवन में उतारने का। जीवन का असली सत्य यही है कि हम सबसे प्रेम से व्यवहार करें, सबको सहयोग दें और जो व्यवहार मेरे अनुकूल ना हो वैसा दूसरों से न करें।

ब्रह्मदेव ने माना 'ब्रह्मतत्व' निवासी निराकार शिव परमात्मा का अस्तित्व

त्रिनिदाद वैदिक विश्व-विद्यालय के उपकुलपति स्वामी ब्रह्मदेव ने कहा कि शिवरात्रि निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप ज्यो-तिर्लिंग परमात्मा शिव का मनुष्य समाज में व्याप्त अज्ञान अंधकार दूर करने हेतु अ-वतरित होने का यादगार दिवस है। उन्होंने कहा कि केवल पूजा-पाठ, व्रत आदि से ही नहीं, अपितु शिव के वास्तविक निराकार स्वरूप की पहचान तथा राजयोग द्वारा उनके साथ अंतरात्मा के सर्व सम्बन्धों की याद से ही मनुष्य अपने पापों को भस्म कर सकता है। उपरोक्त धर्म के पुरोधों ने तथाकथित रुप से परमात्मा शिव के अस्तित्व को स्वीकारा, चाहे वह अंशत: ही क्यों न हो!

परमात्मा की तरह बेहद हम भी बनें

गुरूबचन सिंह, उपाध्यक्ष, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति ने कहा कि परमात्मा ने जब मनुष्य को रचा तो उसको अपने जैसा बनाया। जिस तरह परमात्मा बेहद है, हमारी सोच भी बेहद होनी चाहिए। हमारा जीवन सिर्फ अपने लिए नहीं है, इसका महत्व तभी है जब हम दूसरों के काम आते हैं।

ज्योति स्वरूप को सभी ने माना भगवान

डॉ. एस.एम. मिश्रा, संस्कृत विश्व-विद्यालय कुरुक्षेत्र ने कहा कि सभी धर्मों में परमात्मा को प्राय: ज्योति के रूप में ही माना जाता है, और शिवलिंग भी ज्योति स्वरूप का ही पर्याय है। हमारे देश में जितने भी प्रमुख शिव मंदिर हैं उनको ज्योतिर्लिंगम के नाम से ही जाना जाता है। अनेक भाषाओं और अनेक सिद्धान्तों के कारण लोगों में मतभेद पैदा हुए हैं। आज हमें आवश्यकता है कि हम ईश्वर की एकरूपता को स्वीकार कर सबका सम्मान करें। इस संसार का पतन तब से शुरु हुआ जबसे हमने उसको अलग-अलग समझना शुरु कर दिया।

हम सब एक ईश्वर के बंदे

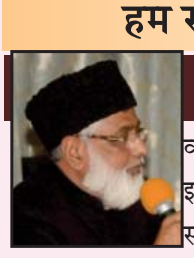

मो.अहमद,राष्ट्रीय सचिव, जमात इस्लाम हिन्द ने कहा कि खुदा प्यार के साथ-साथ न्यायकारी भी है, इसलिए हमें भी चाहिए कि सबके साथ न्याय हो। हम सब उसके बन्दे हैं। किसी के साथ भेदभाव नहीं हो तभी इस विश्व में शान्ति और अमन कायम हो पायेगा।

वो और उसका प्यार सबके लिए समान

डॉ. एम.डी. थॉमस,इन्स्टीट्यूट ऑफ हारमनी स्टडीज़ का कहना है कि आज हम परमात्मा को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं, जबकि वास्तव में देखा जाए तो उसका एक ही रूप है। जिस प्रकार किसी एक ही वस्तु के अनेक देशों में भाषा के आधार से भिन्न-भिन्न नाम होते हैं, वैसे ही परमात्मा के भी अनेक नाम हैं। परमात्मा का प्यार सबके लिए समान है, वो किसी से भी जाति व धर्म के आधार से प्यार नहीं करता। जब हम उससे जुड़ते हैं तो हमें सारा ही विश्व एक परिवार लगता है।